P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE-IX* December- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मध्य प्रदेश के ललितकला संस्थान

रेखा धीमान
सहायक प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
हमीदिया कालेज,
भोपाल

सारांश

चित्र जगत ही तत्कालीन संस्कृति और परिस्थिति की पहचान कराती है । 19वी सदी में पाश्चात्य कलाकारों के आने से मध्य प्रदेश की कला संस्कृति भी प्रभावित हुई। स्वतंत्रता के पश्चात यहाँ के कलाकारों ने पाश्चात्य जगत् में चल रहे कला आंदोलनों को आत्मसात कर नवीन प्रतिमानों को स्थापित किया। इसी समय कला को प्रोत्साहित करने के लिये कला केंद्र स्थापित किये । जहाँ शिक्षा के साथ संगोष्ठियाँ एवं प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाने लगीं। मध्य प्रदेश में स्व. श्री देवलालीकर सन् 1927 में ललित कला संस्थान इन्दौर को स्थापित कर समकालीन कला आंदोलनों का सूत्रपात किया। इसके पश्चात् कलात्मक पर्यावरण विकसित करने के लिये अन्य केन्द्र जैसे ललित कला संस्थान ग्वालियर, लक्ष्मी कला भवन धार, ललित कला संस्थान जबलपुर एवं कला भवन उज्जैन आदि स्थापित किये। ये केन्द्र मुख्यतः जे. जे. स्कूल ऑफ आर्टस्, शांति निकेतन, लखनऊ एवं मद्रास से प्रभावित रहे। मध्य प्रदेश के कला केंद्रों से अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त कलाकार हुए, जिन्होंने मध्य प्रदेश की पहचान विश्व कला जगत से करवायी।

मुख्य शब्द : कम्पनी शैली , कोलाज, पारदर्शी रंग योजना।

प्रस्तावना

प्रारंभ में चित्रकारों ने अपने देश की संस्कृति, मर्यादा व आस्थाओं को ध्यान में रखकर रचनायें की। अनेक धार्मिक व भक्ति भावना से परिपूर्ण चित्र सृजन किया। चित्रकारों ने विषय प्रधान चित्र भी निर्मित किये, जो फोटोग्राफी पद्धति पर आधारित यथार्थवादी शैली पर आधारित थे। स्वतंत्रता के पश्चात् कला के क्षेत्र में नवीन प्रयोग होने लगे। मध्य प्रदेश के कलाकार पाश्चात्य जगत में हो रहे नये आंदोलनों को आत्मसात करने के साथ–साथ अपनी ही ऐश्वर्य मण्डित व परम्परा के भीतर प्रेरणा के ओजस्वी स्त्रोतों को रूपायित करने में प्रयत्नशील है। कला जगत में आधुनिक अमूर्त रूप भारत के असीम दर्शन और अध्यात्म से अभिसिंचित होकर नये प्रतिमानों और नई धाराओं की सृष्टि में परिभाषित है। यह ऊँचे ध्येय, निष्ठा एवं आत्म विश्वास का द्योतक है।[1]

इस समय ही कला को प्रोत्साहन देने के लिये विभिन्न कलाकेन्द्र स्थापित हुए। जहाँ कला के विभिन्न आयामों को समझाया गया। साथ ही असीमित नवीन साधनों का प्रयोग हुआ। मध्य प्रदेश में भी कला गुरूओं द्वारा कला शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा दी जाने लगी। यही नहीं कला प्रदर्शनी तथा कला साहित्य संगोष्ठियां आयोजित की जाने लगी। कलाकारों द्वारा देश–विदेशों का भ्रमण कर कला की व्यापकता की पहचान वर्तमान में कलाकारों ने कड़ी मेहनत कर अपनी राह स्वयं बनाई और निजी शैली में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य किया। भारत के कलागुरूओं तथा कलाकेन्द्रों ने मध्यप्रदेश की कला को विश्व के नक्शे में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थान दिलाया। अंग्रेजो ने भारत में मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास का प्रयोग समुद्र मार्ग के उपयोग हेतु किया था। भारत में अंग्रेजों का पदार्पण सन् 1757 को हुआ। पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अंग्रेज व्यापार के उद्देश्य से आये। सर्वप्रथम पुर्तगाल से वास्कोडिगामा, जहाँगीर काल में इंग्लैण्ड से सर टॉमस रो भारत आये। लार्ड क्लाइव ने भारत में कूटनीति से अंग्रेज शासन की स्थापना की। 16 वीं सदी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई। धीरे–धीरे प्रमुख बंदरगाहों पर अपना आधिपत्य जमाना शुरू कर दिया। कम्पनी शैली के अलावा कलकत्ता में लोक कला से प्रभावित मुगल शैली के चटख रंगों के मिश्रण से कालीघाट पेंटिंग बनायी गई। इसमें धार्मिक तथा समसामयिक विषयों का चित्रण हुआ। मध्यप्रदेश के कलाकारों को मुम्बई कला विद्यालय ने अपनी ओर आकर्षित किया। कला की विशिष्ट शिक्षा के लिये कलाकारों ने मुम्बई कला महाविद्यालय को प्राथमिकता दी।

मुम्बई कला विद्यालय खोलने में टाटा की भूमिका महत्वपूर्ण है। उनके आग्रह पर ब्रिटिश दृश्य चित्रकार ने कहा आर्ट स्कूल खोलिये तब मैं यहाँ

चित्रकला की विद्या सिखाऊँगा। श्री जमशेद जीजा भाई टाटा लौटे और भारत आने पर उन्होंने बम्बई सरकार को एक लाख रूपये का योगदान दिया और इस प्रकार 2 मार्च 1857 को सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना हुई जो एशिया का सबसे विख्यात आर्ट स्कूल बना।[2] यहाँ के एलफिस्टन इंस्टीटयूट में कला की कक्षायें लगायी गई। सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट के प्रथम प्राचार्य लावुड किपलिंग थे। कला स्कूल के आरंभिक समय में कला की शिक्षा देने के लिये इंग्लैंड से कला शिक्षक बुलाये जाते थे। 1936 में आचार्य चार्ल्स जेरार्ड ने यूरोप में प्रचलित कला के विद्यार्थियों को आधुनिक यूरोपीय शैली से अवगत कराया। प्राचार्य ग्रिफीत्स महोदय जब इस स्कूल में आये तो उन्होंने विद्यार्थियों के लिये अजंता के चित्रों की प्रतिलिपि तैयार करवाई।

बम्बई स्कूल पढ़ने वाले विद्यार्थियों में मध्यप्रदेश से श्री देवलालीकर प्रथम विद्यार्थी थे। मध्यप्रदेश में समकालीन कला आंदोलन का सूत्रपात इंदौर से सन् 1927 में हुआ। यहाँ स्व. देवलालीकर ने तत्कालीन होल्कर महाराज से आग्रह कर इंदौर स्कूल की स्थापना की। जे. जे. स्कूल से अनुप्राणित यथार्थवादी दृष्टिकोण पर कलाकार तैयार किये गये। वहीं ब्रिटिश शैली से प्रभावित पाश्चात्य कला शैली में कार्य करने वाले चित्रकार बने। जिनमें नारायण श्रीधर बेन्द्रे, स्व. मकबूल फिदा हुसैन, स्व. एल.एस. राजपूत, स्व. डी.जे. जोशी, चंद्रेश सक्सेना जैसे कलाकार बने। जिन्होंने चित्रकला के अपने मुहावरे रचे।

मध्यप्रदेश के कलाकारों को प्रभावित करने वाला दूसरा कला संस्था शांति निकेतन (पश्चिम बंगाल कोलकता) था। यहाँ की कला शैली चीन की वाश तकनीक से प्रभावित रही है। श्री अमृतलाल वेगड, स्व. श्री राममनोहर सिन्हा और स्व. श्री चंद्रेश सक्सेना इसी कला संस्था से प्रशिक्षित हुए और पर्यावरण के प्रति जागरूक भूमिका निभायी।

कलकत्ता कला विद्यालय की स्थापना सन् 1854 में हुई। सन् 1885 में भित्ति चित्रण का प्रारंभ हुआ। ई.वी. हैवल मद्रास कला महाविद्यालय से स्थानांतरित होकर कलकत्ता आये । उनका कहना था कि –

''यहाँ आकार कल्पना (Designing) पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता, जो समस्त कला की नींव है। बल्कि यहाँ इंग्लैण्ड के प्रादेशिक विद्यालयों की चालीस वर्षों पुरानी निकृष्ट परंपरा अपनायी जा रही है और पूर्वी कला की उपेक्षा करके भारतीय कला विद्यार्थियों को दिग्भ्रमित किया जा रहा है।[3]

कलकत्ता में ई.वी. हैवल अवनीन्द्र नाथ के संपर्क में आये। अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने उप प्रधानाचार्य के पद पर रहते हुए चीन तथा जापान की कला को भी शामिल किया। आपके प्रमुख शिष्यों में प्रमुख थे – नंदलाल बसु, सुरेन्द्र गांगुली, आसित कुमार हल्दार, क्षितिन्द्र नाथ मजूमदार, के. वेकेटप्पा, शारदाचरण उकील तथा समरेन्द्र नाथ आदि। वहाँ की कला से प्रभावित मध्यप्रदेश भोपाल के श्री सुशील पाल ने नंदलाल बोस के सानिध्य में कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। पुनरूत्थान काल में श्री सचिदा नागदेव ने अजंता, एलोरा तथा बाघ गुफा की प्रतिकृतियाँ बनाई। इसके अलावा म.प्र. के कलाकारों को प्रभावित करने में मेयो स्कूल लाहौर, जयपुर स्कूल ऑफ आर्ट तथा लखनऊ कला विद्यालय भी रहे।

मध्यप्रदेश के कलात्मक पर्यावरण को विकसित करने में ललित कला संस्थानों का विशेष स्थान रहा है। इन संस्थानों के चित्रकार प्रशिक्षण प्राप्त कर राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। निम्नलिखित कला संस्थानों में कला की शिक्षा प्रदान की गई।

1. ललित कला संस्था एवं देवलालीकर कला वीथिका, इंदौर
2. ललित कला संस्थान, ग्वालियर
3. लक्ष्मी कला भवन, धार
4. ललित कला संस्थान, जबलपुर एवं कला निकेतन
5. भारती कला भवन, उज्जैन
6. ललित कला संस्थान, इंदौर

ललित कला संस्थान, इंदौर को स्थापित करने का श्रेय स्व. श्री दत्तात्रेय दामोदर देवलालीकर को है। यह संस्था शासिका देवी अहिल्याबाई की नगरी में राजवाड़ा के कृष्णपुरा पुल के पास शहर के मुख्य मार्ग महात्मा गांधी रोड़, इंदौर में प्रारंभ की गई। इसका सूत्रपात 1927 में हुआ। यह तत्कालीन होल्कर महाराज के सहयोग से हो सका। इस संस्थान के प्रारंभ करने के पीछे कुछ ऐतिहासिक घटनायें, कलात्मकता की चाह और कला गुरूओं का अथक प्रयास रहा।

स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश शासक ने इंदौर को कल्चरल सोसायटी का मुख्यालय बनाया था। तुकोजीराव और यशवंतराव होल्कर कला प्रेमी थे। अंग्रेजों के आगमन पर अंग्रेज अपने साथ पाश्चात्य शैली के बने चित्र लाते थे। उन्हें होल्कर शासकों को भेंट करते थे। इस प्रकार इंदौर में पाश्चात्य कला शैली आयी और होल्कर शासकों में कला प्रेम जागा। 1912 में डेली कालेज, इंदौर में चित्रकला की नियमित कक्षायें प्रारंभ की गई। यह कालेज राजाओं, सामंतों और धार्मिक वर्ग के विद्यार्थियों के लिये था। देवलालीकर को प्रताप राव एवं रामचंद्रराव दोनों गुरूओं का निर्देशन प्राप्त था। साथ ही प्राचार्य, प्रो. चामले ने तुकोजीराव से चित्रकला की आगे की पढ़ाई के लिये बम्बई आर्ट कालेज भेजने का आग्रह किया। अतः उच्च अध्ययन के लिये वे बम्बई गये। वहां से अध्ययन उपरांत वे इंदौर आये।

सिद्धस्त श्री देवलालीकर ने अथक प्रयासों से सन् 1927 में इस 'ललित कला संस्थान' की स्थापना की। इस समय श्री देवलालीकर अध्यक्ष और श्री एच.पी. वर्मा

प्रथम प्राचार्य थे। धीरे–धीरे विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई। अतः चित्रकला की विशेष कक्षायें प्रारंभ की। देवलालीकर ने प्रयत्नों और गरिमामय उपलब्धि के कारण रू. 1000 का अतिरिक्त अनुदान पाया। जिससे कला संस्थान के लिये स्टेच्यू पार्ट्स, फर्नीचर और कला सामग्री खरीदी। 1929 में एग्रो हार्टीकल्चर प्रदर्शनी आयोजित की, जिसमें विद्यार्थियों के चित्रों को प्रदर्शित किया गया था। इस समय संस्था को स्वर्ण पदक एवं रजत पदक के साथ ही 1000 रूपये का अनुदान प्राप्त हुआ। इस संस्था के गरिमामय स्तर वे प्रभावित होकर 1933 में डिप्लोमा कक्षायें प्रारंभ की। इससे पूर्व यहाँ एलीमेंट्री और इंटरमीडिएट ड्राइंग कक्षाओं के अध्ययन की व्यवस्था थी।

ललित कला संस्था ने श्री गावड़े, मकबूल फिदा हुसैन, रामकृष्ण अनंत खोत, श्रीधर नारायण बेन्द्रे, ब्रजलाल जी सोनी, श्री सोलेगाँवकर तथा जटाशंकर जोशी जैसे मूर्धन्य कलाकारों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की ख्याति दिलवायी। उस समय श्री दत्तात्रेय दामोदर देवलालीकर ने इन विद्यार्थियों को चित्रकला की शिक्षा प्रदान की। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिये उनके श्रेष्ठ चित्रों को प्रदर्शन हेतु विदेशों में भी भेजा गया। 1934 में मुम्बई आर्ट कमेटी ने श्री नारायण श्रीधर बेन्द्रे तथा श्री सोलेगाँवकर के चार–चार चित्र लंदन ओरिएण्टल आर्ट एक्जीबिशन में चयन कर भेजे। श्री बेन्द्रे के 'Life and Color' और श्री सोलेगाँवकर के 'Trimurti' चित्र को बेलिंगटन हाउस लंदन की प्रदर्शनी में बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई। श्री मकबूल फिदा हुसैन और रज़ा ने भी विश्व स्तर की ख्याति प्राप्त की।

सन् 1980 में प्राचीन 'ललित कला संस्थान' के अग्रभाग में 'देवलालीकर कला वीथिका' का लोकार्पण हुआ, जो समुचित प्रकाश व्यवस्था से सुसज्जित था। इस भवन के पिछले हिस्से में शैक्षणिक तथा प्रशासनिक भवन है। प्राचार्य कक्ष, संस्थान कार्यालय, पुस्तकालय तथा अन्य शैक्षणिक कक्षायें अवस्थित थीं। यहाँ एक विशाल सभागृह और कला स्टूडियो भी बना हुआ था। यह एक ऐसा संस्थान है जहाँ चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक्स के सैद्धांतिक और प्रायोगिक विषयों का अध्ययन करवाया जाता है।

सन् 1966 तक यह बम्बई के सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस से सम्बद्ध रहा। यहाँ National Council of Technical Education (भारत शासन) के पाठ्यक्रम संचालित होते रहे। लगभग डेढ़ दशक तक संस्कृति विभाग की यह व्यवस्था कायम रही। 1 अप्रैल 2002 से यह आयुक्त, उच्च शिक्षा भोपाल को हस्तांतरित किया गया। इस संस्थान में डिप्लोमा के अलावा विद्यार्थियों को विद्या–वाचस्पति की उपाधि का भी निर्देशन दिया जाता है। इस संस्थान में विद्यार्थियों को परम्परागत रूप से तैयार किया जाता है और विश्व की दौड़ में आधुनिक प्रयोगात्मक शैलियों में भी तैयार किया जाता है। जिसके अनेकों उदाहरण हमारे सम्मुख है जिन्होंने यहां प्रशिक्षित होकर विश्व स्तर पर मौलिक पहचान बनायी।

इस संस्थान को समुचित रूप से चलाने के लिये प्रथम प्राचार्य श्री एच.वी. वर्मा सहित श्री डी.जे. जोशी, श्री एम. किरकिरे, श्री चन्द्रेश सक्सेना, श्री श्रेणिक जैन, श्री शशिकांत मुण्डी, श्री अब्दुल हमीद खान, श्री देवेन्द्र जैन, श्री कर्ण सिंह और श्रीमती राजुल भण्डारी के अथक प्रयास रहे। जिन्होंने इस संस्थान को उच्चतम शिखर तक पहुँचाया। संस्थान को इस स्थिति तक पहुंचाने में सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, बाम्बे की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। वहाँ के प्राचार्य ग्लेडस्टोन सोलोमन और श्री अहिवासी जैसे कला गुरूओं ने श्री देवलालीकर, श्री बेन्द्रे, श्री मकबूल फिदा हुसैन, सैयद हैदर रज़ा, श्री डी.जे. जोशी, श्री चंद्रेश सक्सेना जैसे शिष्यों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

श्री डी.जे. जोशी एवं श्री चंद्रेश सक्सेना ने छात्रों को प्राकृतिक सौंदर्य से अवगत कराया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे शिक्षार्थियों को संस्थान से बाहर दृश्य–चित्रण के लिये बिजासन टेकरी, खजराना, रालामण्डल आदि स्थानों पर ले जाते थे। मध्यप्रदेश में ये ललित कला संस्थान विकासोन्मुख हैं और कलाकारों को सृजन के लिये प्रेरित कर रहे हैं।

ललित कला संस्थान, ग्वालियर

ग्वालियर क्षेत्र की कला का इतिहास मध्य काल से शुरू होता है। ग्वालियर कलम पर राजपूत शैली, ईरानी–फारसी मुगल शैली तथा पश्चिमी शैली का प्रभाव दिखाई देता है। ग्वालियर के राजा डूगेंद्र सिंह और राजा मान सिंह तोमर ने अपने समय के चित्रकारों तथा शिल्पकारों को संरक्षण देकर राजपूत शैली को गति प्रदान की। ग्वालियर के कलाकारों द्वारा निर्मित चित्र शैली ग्वालियर कलम कहलायी। ईरानी, फारसी, मुगल कला का प्रभाव तत्कालीन राजपूत शैली पर पड़ा। जगन्नाथ, खेमकरन, केशवलाल और नंद आदि कलाकारों ने मुगल शैली में कार्य किया। सन् 1765 में ग्वालियर पर मराठों का आधिपत्य हुआ। तब मुगल और राजपूत शैली से भिन्न चटख रंग वाली शैली का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें शीशे जड़ने का कार्य किया। रागमाला के 42 चित्र इस शैली के अनुपम उदाहरण हैं।[4] स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात चित्रकला का नवीन युग प्रारंभ होता है। मूर्धन्य चित्रकार डी.डी. देवलालीकर ने चित्रकला के विकास के लिये प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना के लिये विशेष प्रयास किये।

आपके प्रयासों से ग्वालियर में सन् 1954 में ललित कला महाविद्यालय की स्थापना हुई। प्रारंभ में यह संस्थान 1960 तक जनकगंज में स्थित स्कूल भवन में संचालित था। डी.डी. देवलालीकर को प्रथम संस्थापक प्राचार्य के रूप में मध्यप्रदेश शासन ने नियुक्ति दी। आपने चित्रकला के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों का समावेश किया। छोटे चित्रों की अपेक्षा बड़े चित्रों को बनाने के लिये प्रेरित किया। जल रंगों के स्थान पर तैल रंग (Oil colours) के इस्तेमाल पर जोर दिया। इस समय राजशाही शासन होने से राजा–रानी से संबंधित चित्रों की अधिकता रही। इसके अलावा उन्होंने एक परिवर्तन और करना चाहा। आपने प्रकृति चित्रण को विशेष महत्व प्रदान किया। इस पद पर आपने दो वर्षों तक कार्य किया। यह संस्थान प्रारंभ से वर्ष 1960 तक जनकगंज स्थित स्कूल भवन में संचालित था। 30 अक्टूबर 1956 को सिंधिया परिवार द्वारा दी गई भूमि पर मध्य भारत के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री तखतमल जैन द्वारा वर्तमान भवन का शिलान्यास किया गया एवं 20 मई

1962 को तत्कालीन शिक्षा मंत्री स्वर्गीय शंकर दयाल शर्मा के प्रयत्नों से इस भवन का उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रतिरक्षा मंत्री श्री बी.के. कृष्णमेनन के द्वारा संपन्न हुआ।

पूर्व में वर्ष 1956 तक शिक्षारत विद्यार्थियों को परीक्षा देने मुंबई जाना पड़ता था और मुंबई से ही जी.डी. आर्ट की पत्रोपाधि प्राप्त होती थी। 1956 में एल.एस. राजपूत के प्राचार्य पद पर रहते हुए संस्थान की परीक्षायें एवं प्रकाशन म.प्र. तकनीकी शिक्षा मण्डल के अधीन कर दी गई। सन् 1977 में स्व. श्री मदन भटनागर के प्राचार्य पद पर रहने पर इस संस्थान में मूर्तिकला विभाग की स्थापना की गई। 1986 तक इस संस्थान में केवल डिप्लोमा कोर्स संचालित था। इसी वर्ष इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से संबद्ध होने के कारण स्नातकोत्तर (डिग्री) कोर्स भी संचालित किया जाने लगा। यह संस्थान 2007 से संस्कृति विभाग को हस्तांतरित कर दिया गया। अब यहां बी.एफ.ए. और एम.एफ.ए. की उपाधि प्रदान की जाती है। इस संस्था को एल.एस. राजपूत, श्री मदन भटनागर, श्री हरि भटनागर, राजुल भण्डारी, पी.एस. लोधी, आर.आर. स्वर्णकार, श्री शंखवार, अपर्णा अनिल और प्रसन्न पाटकर जैसे प्राचार्यों ने कला के विकास के प्रयास किये।

इस कला महाविद्यालय से प्रमुख चित्रकार मनोहर गोधने, विश्वामित्र, वासवानी, हरि भटनागर, देवेन्द्र जैन और साल्वी आदि कलाकारों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनमें से अनेक चित्रकारों ने प्रशिक्षण उपरांत उच्च पदों पर आसीन हुए और चित्रकारी शिल्पकारी के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई। देवलालीकर के समक्ष एम. एस. भाण्ड, सुधीर खास्तगीर रूद्रहांजी, एल.एस. राजपूत, डी.पी. शर्मा, एम.एस. कान्हड़े, यू. कुमार, विमल कुमार, बसन्त मिश्रा, बसन्त धुमाल, मदन भटनागर, शंभूदयाल श्रीवास्तव, डॉ. राजुल भण्डारी, श्रीमती पुष्पा काले, द्रविड़, विजय मोहिते जैसे अनेक कलाकारों ने चित्रकला को नये आयाम दिये। महाविद्यालय की स्थापना के बाद आंग्ल चित्रकारी को बढ़ावा मिला। ग्वालियर कलम से पहचाने जाने वाली शैली पर पाश्चात्य शैली का विशेष प्रभाव पड़ा।

इसी समय चित्रकारों के जन सहयोग से 'कलाकार मण्डल' की स्थापना हुई। इस संस्था ने पहली कला प्रदर्शनी का आयोजन ग्वालियर में किया। इसमें एम. एस. भाण्ड, उमेश कुमार, रूद्राहांजी, प्रभात नियोगी, रत्नाकर, लक्ष्मण भाण्ड, रामराव भाण्ड, केशव बाघ, एल. एस. राजपूत, विजय मोहिते, दुर्गाप्रसाद शर्मा, विश्वामित्र बासवाणी तथा विमल कुमार के चित्रों को प्रदर्शित किया। इसके पश्चात मण्डल और कलाकार सोसायटी के सहयोग से अखिल भारतीय प्रदर्शनी का कार्य आरम्भ हुआ।

मध्यप्रदेश राज्य की स्थापना के पश्चात 1952 में 'मध्य–प्रदेश कला परिषद' का गठन हुआ। सन् 1955 में कलावीथिका (आर्ट गैलरी) की स्थापना की गई। इसके पश्चात् ललित कला संस्थान के निजी प्रयासों से समकालीन और कला के उभरते कलाकारों को प्रकाश में लाने के प्रयास हुए। कलाकारों ने कला जगत में राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रदर्शनियों में भाग लिया और नवीन तकनीक का प्रयोग कर कला जगत को अभिभूत कराया। इस प्रकार ग्वालियर का कला क्षेत्र में एक अपना ही स्थान है।

धार कला विद्यालय (लक्ष्मी कला भवन – धार)

म.प्र. के ऐतिहासिक नगरी धार का महत्व इतिहास राजनैतिक के साथ ही कलात्मक पक्ष के कारण भी है। इसका प्राचीन नाम 'धरा–नगरी' था। इसका ऐतिहासिक महत्व शताब्दियों से रहा है तथा यहाँ का वैभव कलात्मकता दृष्टिगोचर होती है। लगभग 1000 वर्षों से परमार कालीन राजाओं का आधिपत्य रहा। इनके अलावा मुस्लिम शासकों का आधिपत्य भी रहा परन्तु इस काल में कला क्षेत्र में अधिक प्रगति नहीं दिखाई देती है। धार की प्रगति विशेषकर परमार काल में दिखाई देती है।

मालवा में धार नगरी को राजा भोज (परमार–नरेश) की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है वहीं कला संस्कृति के लिये भी प्रसिद्ध है। परमार काल में चित्रकला विषय पढ़ना बच्चों के लिये अनिवार्य था। कासार साहब चित्रकला पढ़ाने में विशेष योग्यता रखते थे। इस समय इन्टर ग्रेड परीक्षा का केन्द्र था। हाईस्कूल में भी यह विषय पढ़ाया जाने लगा। इस समय 'बड़नेरकर सर' को चित्रकला पढ़ाये जाने का आधिपत्य सौंपा। इस समय कोई विशेष प्रगति नहीं हुई।

1933 में श्री रघुनाथ फड़के साहब के आने से कलात्मक क्षेत्र में कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है। आप साहित्य, संगीत, चित्र तथा शिल्प कलाओं में निपुण थे। राजमाता कला के प्रति सजग थीं, अतः आपके प्रयास से कला शिक्षण संस्था स्थापित करने की आज्ञा दी गई। 28 नवम्बर 1938 को राजमाता के नाम पर 'लक्ष्मी कला भवन' स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना हुई। श्री र. कृ. फड़के (अण्णा) को कला भवन की स्थापना के समय प्राचार्य पद संभालने को कहा गया लेकिन उन्होंने इस पद के लिये इन्कार कर दिया और 'ऑनरेरी आर्गनाइजर' के रूप में पद ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की। इस पद (प्राचार्य) के लिये उन्होंने अपने होनहार शिष्य श्री डी.जे. जोशी को पद ग्रहण करने के लिये कहा। श्री डी.जे. जोशी की कला–परख आपने उनके शिष्यकाल में ही कर ली थी, जबकि वे इन्दौर में कला शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। वे उन्हें धार ले आये। यहाँ पर डी.जे. जोशी कला की बारीकियों से अवगत हुए उनके परिश्रम, लगन के कारण वे अपने फन में मंजते चले गये और कला संस्थान 'लक्ष्मी–भवन' के प्राचार्य पद का निर्वाह किया। इन्होंने इस संस्थान को अनेकों सुविधायें मुहैया करवायी। यह संस्थान प्रगति के मार्ग पर दिन प्रतिदिन अग्रसर होता चला गया। इसकी मुख्य विशेषता यह थी कि विद्यार्थियों को यहाँ निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी और विद्यार्थियों को जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस की परीक्षा में बैठाया जाता था। इस संस्थान में पाँच वर्ष पाठ्यक्रम की वार्षिक पढ़ाई करायी जाती थी।

स्वतंत्रता से पूर्व इस संस्था का खर्च धार राज्य शासन वहन करता था किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात यह कार्य मध्य भारत राज्य सरकार द्वारा किया जाने लगा। सन् 1952 में डी.जे. जोशी के इन्दौर जाने पश्चात् श्री दिनकर देव प्रभारी प्राचार्य बने। शासन ने इसका स्वरूप बदलकर ललित कला महाविद्यालय धार कर दिया। इस

महाविद्यालय के प्राचार्य पद को विभिन्न समय में डी.जे. जोशी, दिनकर विश्वनाथ देव (प्रभारी प्राचार्य), डॉ. आर.सी. भावसार, श्री मधुकर गोविन्द किरकिरे श्री हरी भटनागर आदि कलाकारों ने सुशोभित किया।

1974–75 में इसका नाम ललित कला महाविद्यालय से बदलकर ललित कला संस्थान कर दिया। इसका विशेष कारण यह रहा कि यह संस्था किसी महाविद्यालय से संबद्ध नहीं थी। इस कला महाविद्यालय का विकास की गति अन्य कला महाविद्यालयों से कम थी। इस प्रकार इस कला संस्थान का चित्रकला और मूर्तिकला के शिक्षण संस्थाओं में विशेष महत्व रहा है।

कला के क्षेत्र में श्री खण्डेराव नाड़कर का भी दखल रहा। वे कला प्रेमी थे, आपके सहयोग से धार में कलावीथिका की स्थापना हुई। यह खण्डेराव टेकरी कला विथिका कहलायी। इसके पश्चात् ''आनन्द–महाविद्यालय'' में भी चित्रकला प्रारम्भ हुई। यहाँ विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। वर्तमान में शासकीय महाविद्यालय, धार में स्नातक स्तर तक कला की शिक्षा दी जा रही है।

भारतीय कला भवन – कला महाविद्यालय, उज्जैन

उज्जयिनी धार्मिक और सांस्कृतिक नगरी है। यहाँ परमार कालीन स्थापत्य और कलाकृतियाँ देखने को मिलती हैं। भारतीय कला भवन को स्थापित करने का श्रेय श्री वाकणकर को जाता है। श्री वाकणकर 1953 तक राष्ट्रीय सेवक संघ के प्रचारक, प्रसारक के रूप में विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते रहे। आपने धार, निमाड़, रतलाम से शिक्षण कार्य पूर्ण किया। आपने अपना निवास या कार्य स्थल उज्जैन बनाया। पिता के सहयोग से इमारत की तीसरी मंजिल के एक कक्ष में कला–शिक्षण का प्रारम्भ किया। आपने प्रसिद्ध प्रतिमा सरस्वती के नाम पर 'भारती कला भवन' नाम दिया। इस कला भवन की स्थापना 1953 में हुई। स्थापना के पूर्व आपने कई चित्रकारों से सम्पर्क किया, जिनमें जगमोहन आर्टिस्ट मदनलाल शर्मा, कोरान्ने, श्री भाण्ड, श्री गिरी, श्री केशव राव अम्बेडकर आदि था। भारतीय कला भवन 1968 से परीक्षा आयोजित करने का केन्द्र बनाया गया तथा 1977 से प्रिपटेरी कोर्स द्विवर्षीय ग्रेड ड्राइंग परीक्षा देने योग्य बनाया गया। कला के प्रचारार्थ पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। प्रारम्भ में हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाशित किया गया। 1977 से ''आकार'' नामक कला पुस्तक नियमित प्रकाशित हो रही थी। इसके अलावा कला भारती पुस्तक प्रकाशित होती थी।

वर्तमान में भारती कला–भवन का नाम सम्मान से लिया जाता है। डॉ. वाकणकर का अपने शिष्यों के प्रति समर्पण भाव ने शिष्यों को काफी ऊँचाई तक पहुँचाया। श्री सचिदा नागदेव आपके प्रथम और प्रमुख शिष्यों में से हैं, जिन्होंने बचपन में ही 1956 में शंकर्स अंतर्राष्ट्रीय बाल चित्रकला प्रतियोगिता में पुरस्कार पाकर सम्मानित हुए एवं 1990 में जापान अवार्ड प्राप्त किया। इनके अलावा आपके अन्य शिष्यों में एम. कुरैशी, श्रीमती शिवकुमारी जोशी, डॉ. आर.सी. भावसार, श्री कृष्ण जोशी, विष्णु भटनागर एवं श्री राधेश्याम भारद्वाज हैं।

चित्रकारों को अपने चित्रों को प्रदर्शित किये जाने के लिये 1965 से 'कालिदास–समारोह' हर वर्ष आयोजित किया जाता है। इसमें प्रतिभागियों से कालिदास के काव्य ग्रंथों पर चित्र एवं शिल्प आमंत्रित किये जाते हैं। सन् 1964 में 'माधव महाविद्यालय उज्जैन' में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर चित्रकला विषय में शिक्षण कार्य प्रारम्भ हुआ। शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन में भी चित्रकला की स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षा प्रदान की जा रही है। वर्तमान में कुछ चित्रकारों द्वारा 'कलावर्त न्यास' तथा 'मानव संकेत' की स्थापना की गई। इस प्रकार चित्रकला के विकास में उज्जैन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

उद्देश्य

ललित कला संस्थानों में विद्यार्थियों को कला का गहराई से अध्ययन करवाया जाता है। इसका श्रेय कला गुरुओं को जाता है। जिन्होंने विद्यार्थियों को कलाकार बना आधुनिक कला से अवगत कराया। मध्यप्रदेश में स्थित ललित कला संस्थान से पारंगत कलाकारों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। मध्यप्रदेश के ललित कला संस्थानों का उद्देश्य कला – रुपी वृक्ष की शाखायें पूरे विश्व में फैलें और उसमें प्रफुल्लित पुष्प की सुगंध से समस्त संसार आनंदित हो सके। कलाकार आधुनिक नवाचारों से विश्व में पहचान बना सके।

निष्कर्ष

मध्यप्रदेश के कलाकारों के उन्मुखी विकास में कलाकेन्द्रों की बहुत बड़ी भूमिका है। जिसप्रकार भारत के कलापर्यावरण के विकास में ई. व्ही. हैवल, ग्रिफित्स महोदय, सोलोमन एवं टाटा आदि का योगदान है, वैसा ही देवलालीकर, वाकणकर, जटाशंकर जोशी एवं मुकुन्द भाण्ड आदि का रहा। जिनके सानिध्य में शिष्यों ने कला कार्य कर स्वयं को समृद्ध बनाया। कलागुरुओं का उद्देष्य शिष्यों को प्रशिक्षित कर अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय मानचित्र में स्थापित किया जाना है। इन केंद्रों ने श्रीधर बेंद्रे, रज़ा, मकबूलफिदा हुसैन, गावड़े, चेद्रेश सक्सेना एवं सचिदा नागदेव जैसे रंगों के चितेरे दिये। जिनकी ख्याति देश –विदेशों में है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कलावार्ता, राममनोहर सिन्हा – 'मध्यप्रदेश की कला परम्परा' – पृष्ठ–3
2. "Story of J.J. School of Art" The Government of Maharashtra by the dean Sir J.J. School of Art Dr. D.N. Road, Bombay, Page-1
3. समकालीन कला – जून–सितम्बर 2002 अंक 22 ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली पृष्ठ–37
4. बारोलिया अनुराधा – ग्वालियर (म.प्र.) के प्रमुख चित्रकार – शोध कार्य, जीवाजी विश्वविद्यालय म.प्र. – पृष्ठ–63 टंकित